अध्याय सत्ताईसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"भवभय खंडित करने वाले, हमेशा मुक्त (जिसे भवबंधन न हो) ऐसे आप अनंत हैं। आप को विनम्रता से प्रणाम करने वालों का भ्रम नष्ट करने वाले तथा षड्रिपूओं के साथ युद्ध करने वाले आप वीर हैं। सभी सद्‌गुण जहाँ बसते हैं, जो भक्तों को भव पाश से मुक्त करते हैं, जो सद्‌गुणों का धन उदारता से बाँटते हैं, जो दाता तथा दृढ़ हैं, वही सिद्धनाथजी हैं।"

हे सिद्धारूढ़ यतिवर्य, आप उदारता से अभय देते हैं; आप का सच्चा स्वरूप निर्गुण ब्रह्म होकर, आप सगुणावतार धारण करने वाले दयासागर तथा दीनबंधु हैं। आप के नाम का जाप करने से पाप चारो ओर भाग निकलते हैं तथा आप के नाम का स्मरण करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। अन्य कोई उपासना किए बगैर, केवल आप के चरणों का ध्यान करने से भक्तों का भवभय दूर होता है। आप के मुँह से निकले हुए अमृत से भी अधिक मधुर शब्द सुनते ही भवताप का हरण होकर मन शांत और आनंदित होता है। भक्तों का सुख यही आप का सुख होने के कारण, हमेशा शुद्ध तथा आनंदित होने वाले आप उनके सुख की व्यवस्था करते हैं।

प्रतिवर्ष सावन के महिने में तथा महाशिवरात्री के दिन सिद्धाश्रम में एक सप्ताह दिनरात भजन और कीर्तन होते थे। महाशिवरात्री के दिन लाखो लोग इकट्ठा होते थे, जिनके लिए मठ में ही भोजन बनता था तथा दोनों समय उन्हें भोजन दिया जाता था। इतने लोगों के इस्तेमाल के लिए बहुत पानी की आवश्यकता होती थी। एक बड़े तालाब का पानी भक्तों के इस्तेमाल के लिए उपयोग में लाया जाता था, इस तालाब में वर्षा का जल ही इकट्ठा होता रहता था। वर्षा ठीक न होनेपर, तालाब का पानी पर्याप्त नहीं होता था; तब एक कोस दूर जाकर पानी लाना पड़ता था, जिससे भक्तों को बहुत कष्ट होते थे। ऐसे में एक साल अनावृष्टि के कारण तालाब सूखकर कोरा हो गया। महाशिवरात्री का समारोह आ रहा था, परंतु तालाब में एक बूंद भी जल नहीं था। यह देखकर सतगुरुनाथजी ने भक्तों से कहा, "तालाब सूख गया है तथा समारोह के लिए बिलकुल भी जल नहीं है। समारोह के लिए अनगिनत लोग आएँगे और उनके

लिए भरपूर जल की आवश्यकता होगी। दूर से जल लाना भी बहुत कष्टकारक होगा। इसलिए मेरा कहना है की इस वर्ष आप समारोह मत मनाईए, अन्यथा आप को सभी लोगों के लिए जल का प्रबंध करना अति कष्टकारक होगा। समारोह के समय लोगों के मन में बहुत उमंग होती है, उस समय उनको दुख न हो, इसीलिए मैं कहता हूँ की इस वर्ष समारोह मत मनाईए।" उनकी बात सुनकर भक्त मन ही मन बहुत निराश हो गए। वे आपस में कहने लगे, "हमारी भक्ति की दृढ़ता की परीक्षा लेने के लिए सतगुरुजी ने ऐसा कहा होगा। इतने भक्तगण होने के बावजूद भी सतगुरुजी के कार्य से डरकर कही वे पीछे तो नहीं हटते, इसकी परीक्षा करने के लिए ही सतगुरुजी ने ऐसा कहा होगा इस में कोई संदेह नहीं।" कुछ मक्कार लोगों ने कहा, "आप लोग तो कहते हैं की सिद्धनाथजी साक्षात ईश्वर हैं तथा कोई भी कार्य करना उनके लिए असंभव नहीं हैं। अब आप लोग हमें बताइए की इन्होंने अगर चाहा तो पृथ्वी पर वर्षा क्यों न होगी? अगर आप के सतगुरुजी भक्तों की पूजा स्वीकार करते हैं, तो भला उन्हें क्यों जल के अभाव की चिंता हो?" मक्कारों की बातें सुनकर संतप्त हुआ भक्त तुकप्पा बोला, "अरे मूर्खों, सिद्धनाथजी साक्षात निर्गुण ब्रह्म होकर वे सर्वगत हैं। इस जगत के उत्पत्ति, स्थिति तथा लय ऐसे साधारण कार्य त्रिमूर्ति पर (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) सौंपकर स्वयं उपाधिरहित होकर भक्तों के प्रेम में रंगकर वे इस मृत्युलोक में क्रीडा करते हैं। हर एक मनुष्य को उसके कर्म के अनुसार ईश्वर सुख दुख देता है। आलसी लोग कहते हैं की भक्ति करना अगर आसान होता तो हम भी करतें। परंतु कितने भी संकट क्यों न आएँ, फिर भी ईश्वर भक्ति के लिए आवश्यक कार्य को नहीं छोड़ना चाहिए ऐसा जो निश्चय करता है, उसी पर सतगुरुजी कृपा करते हैं। हमारे निश्चय में कितनी दृढ़ता है, इसकी परीक्षा करने के लिए ही सतगुरुजी ने यह तरकीब सोची है, इसीलिए हम सब मिलकर आज यह निश्चय करेंगे की, प्राण भी जाए तो भी हम सतगुरुकाज नहीं छोडेंगे।"

अन्य भक्तों को तुकप्पा की बात जँची। उन्होंने कहा, "शाबाश तुकप्पा!" और सभी ने मिलकर उस दिन वही निर्णय लिया। दूसरे दिन सभी भक्त इकट्ठा हुए और तुकप्पा को उनका मुखिया नियुक्त करके सिद्धारूढ़जी के पास आए। तुकप्पा ने कहा, "हे प्रभु, आप ईश्वरी अवतार होकर हमारे जैसे पतितों का उद्धार

करने हेतु अवतरित हुए हैं। कल आप ने जो कुछ भी कहा उसे हम आप की आज्ञा नहीं हैं ऐसा समझते हैं। कल आप ने जो कुछ भी कहा वह केवल हमारी भक्ति की परीक्षा करने हेतु कहा यही सच है ऐसा हम समझते हैं। ऐसा वार्षिक समारोह लोगों के उद्धार के लिए होता है तथा उस समय विविध प्रकार की सेवा करने के मौके प्राप्त होते हैं; ऐसे मौके अगर हाथ से निकल गए तो हमारे हाथों से सतगुरुसेवा कभी भी नहीं होगी, सांसारिक सुख एवं दुखों के जाल में फँसे हमारे जैसे लोगों की स्थिति आगे क्या होगी? इस समारोह के लिए अन्य गाँवों से लाखों की तादाद में लोग आते हैं और सतगुरु सेवा करके कृतकृत्य होकर लौटते हैं। समारोह न मनाने से उनकी घोर निराशा होगी तथा उन्हें आप के दर्शन भी नहीं होंगे। भक्तोद्धार का कार्य भी थम जाएगा। इसलिए मेरी प्रार्थना आप सुन लीजिए, इस वर्ष अगर हमें अधिक सेवा करनी भी पड़ जाए, तो हम समझेंगे की आप की हम पर अधिक कृपा है। तथा प्राण जाए तो भी कठिनाईयों से डरकर पीछे नहीं हटेंगे; कुल मिलाकर सतगुरुकाज भली-भाँति पूरा करने की ओर हम ध्यान देंगे। हमारा यह शरीर नश्वर है, यह अवसर अगर हाथ से निकल जाए, तो न जाने ऐसा अवसर फिर कब प्राप्त होगा! इसलिए हम सभी ने मिलकर सतगुरुकाज करने का निर्णय लिया है। इसलिए, समारोह मनाने की आप हमें आज्ञा दीजिए।" उसकी प्रार्थना सुनकर सतगुरुजी ने कहा, "अगर यही आप का निर्धार है तो समारोह अवश्य मनाईए, कितने भी संकट क्यों न आए, हम सब मिलकर समारोह का कार्य पूरा करेंगे। ध्यान में रहें, पूरी जिम्मेदारी आप ही पर सौंपी है।" कहकर सतगुरुजी हँस पड़े। क्योंकि, भले ही समारोह का कार्य उन्होंने भक्तों पर सौंपा हो, भक्तों की पूरी जिम्मेदारी उन्हीं पर होने के कारण, वास्तव में सारी जिम्मेदारी उन्हीं को निभानी पड़ी।

सतगुरुजी की बातें सुनकर भक्तगण हर्षित हुए और सतगुरु नाम स्मरते हुए घर लौटे। दयालु सतगुरुनाथजी भक्तों की चिंता में मग्न हो गए। दूसरे दिन हाथ में एक खाली तसला लेकर वे निकल पड़े और सूखे तालाब के बीचोबीच जमीन पर बैठ गए; उन्होंने तसला पास ही रखा था। उसके पश्चात उन्होंने तसले पर हाथ रखा और तीन घटिका (७२ मिनट) उसी स्थिति में बैठकर उसके उपरांत तसला लेकर आश्रम लौट आए। भक्तगणों ने लबालब हुआ तसाला

देखा तो वे आश्चर्य से दंग रह गये और बोले, "सचमुच ही इस महात्मा की शांतता और स्थिति अगम है।" इतने में एक अचरज हुआ। आकाश में चारो ओर बादल छा गये, बादलों की जोरदार गर्जना सुनाई पड़ने लगी तथा बिजली कड़कने लगी। अति हर्षित हुए सारे भक्त सिद्धनाथजी के पास आकर बोले, "सतगुरुनाथ महाराज, बाहर जोरों से वर्षा हो रही है। निःसंदेह यह केवल आप ही की लीला है।" मुसलधार वर्षा हुई, चारो ओर से पानी का प्रवाह तालाब की ओर बहने लगा और एक घंटे में तालाब लबालब हुआ| तालाब लबालब हुआ देखकर तुकप्पा हर्ष से नाचने लगा। वह सिद्धजी से बोला, "सतगुरुमहाराज, सचमुच में आप एक करुणा की मूर्ति हैं। भक्तों के कष्ट आप से देखे नहीं जाते। हालाँकि, आप ने स्वयं ही इस कार्य की जिम्मेदारी ली थी, फिर भी आप ने हमारी परीक्षा ली यह निश्चित है।" सारे भक्तगण हर्षोन्माद से नाचने लगे। सिद्धनाथजी भक्तों के साथ तालाब के पास आए| सारे भक्तों ने मिलकर उनकी आरती उतारी। उस समय कुत्सित बाते करने वाले निंदक आगे बढ़कर बोले, "हम ने बिना कारण आप की बहुत निंदा की, अब हम आप के चरण छूकर कहते हैं की आप हमें क्षमा करें।" उसपर सतगुरुजी ने कहा, "ईश्वर ने आप के शब्दों का सम्मान करके वर्षा गिराने के कारण वह पूजनीय हो गया। आप के कारण सब का भला हुआ, अन्यथा सभी को दुख झेलना पड़ता। निश्चित ही भक्त तथा अभक्तों को ईश्वर एक समान ही फल देता है। किसी ना किसी प्रकार, ईश्वर का चिंतन होता है, यही उसके अस्तित्व का प्रमाण है। परंतु भक्तों को सुख तथा निंदकों को इस मृत्युलोक में दारुण दुख प्राप्त होता है। अब आप को पश्चात्ताप हुआ है ओर यही आप की क्षमा है; इसके पश्चात आप निरंतर नामस्मरण करते रहिए ताकि आप को दुख का भय नहीं रहेगा।" महात्मा के इन विशेष सद्गुणों के देखकर सारे पुरुष, महिलाएँ और बालकों का गला रुंध गया और प्रेम की भावना के कारण सभी की आँखों से आँसू बहने लगे। भक्तों पर करुणा करने वाले सतगुरुनाथजी ने भक्तों की परीक्षा करने के लिए लीला दिखाई; जो स्वयं हमेशा तृप्त तथा निष्काम हैं, वे भक्तों की रक्षा के लिए दौड़े आए।

अब इस कहानी का तात्पर्य सुनिए। जो हमेशा आत्मा के साथ एकरुप हुए रहते हैं, ऐसे मुमुक्षुओं को हर वस्तु के प्रति आध्यात्मिक विचार करने में ही आनंद प्राप्त होता है। सिद्धजी यही सतगुरुनाथजी हैं। समारोह को भवसागर की नाव समझें। गुरुदेवजी ने मुमुक्षुओं की परीक्षा लेने के लिए कहा की उस नाव के लिए आनंदरुपी जल की आवश्यकता है। "सभी जनों की विविध प्रवृत्तियों से उन्हें तारने का कार्य हम लोगों से संभव नहीं है, क्योंकि यहाँ आनंदरुपी जल की सुविधा नहीं है। आप लोग अपने शरीर को योग तथा तप से दंडित करें, तभी आप को पार जाना संभव होगा, अन्य कोई उपाय नहीं है। अगर ऐसा करना असंभव हो तो लोगों को पार लगाने का कार्य हम स्थगित करेंगे, जिससे आप लोगों को अपने शरीर को कष्ट देने का भय भी नहीं रहेगा।" ऐसा सतगुरुजी ने कहते ही, अन्य कोई उपाय न सूझने के कारण सभी भयभीत हो गए। उसपर उन्होंने सद्भाव रूपी तुकप्पा को अपना मुखिया नियुक्त करके तपस्या रूपी कार्य करना न छोड़ने का निर्णय लिया और सतगुरुजी को अपना निर्णय सूचित किया। सतगुरुजी ने उस निर्णय को स्वीकार करते हुए विचार किया की इन भक्तों ने अच्छी ब्रह्मविद्या खोज निकाली है! जिस प्रकार मेघ विद्या से उन्होंने वर्षा गिराई उसी प्रकार ब्रह्मविद्या से उन्होंने बोधरूपी वर्षा गिराई; आनंदरुपी प्रवाह के बहने के कारण सभी पार लग गए। इस भवसागर के पार जाने के लिए तप करके शरीर को कष्ट देना या योगादि उपासना करने की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल सतगुरुबोध रूपी नौका ही सभी को भवसागर के पार लगाने के लिए काफ़ी है। ऐसे यह कृपालु सतगुरुनाथजी हमेशा भक्तों के कार्य में लीन रहते हैं; वे ही अनाथों के नाथ होने के कारण, उन्हीं के चरणों में शरण लेनी चाहिए। श्रोतागण, भवसागर के पार जाने के लिए सतगुरुजी की जीवनी का श्रवण करना यह एक आसान उपाय होने के कारण, सावधान होकर अगले अध्याय में बयान की हुई कहानी सुनिए। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह सत्ताईसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥